क. कठिन समय में प्रार्थनाएँ:

- **एलिय्याह: संकट के बीच की प्रार्थना**
  - परमेश्वर संकट के समय हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर कैसे देता है?
    (1) एलिय्याह की एक साधारण प्रार्थना के बाद, परमेश्वर ने तुरंत आग के द्वारा उत्तर दिया (1 राजाओं 18:36-38)।
    (2) सात बार वर्षा के लिए प्रार्थना करने के बाद, परमेश्वर ने एक छोटा सा बादल भेजा, जो एक शक्तिशाली तूफान में बदल गया (1 राजाओं 18:42-45)।
    (3) जब एलिय्याह ने मृत्यु माँगी, तब परमेश्वर मौन रहा, लेकिन अपने स्वर्गदूत को उसे भोजन देने के लिए भेजा (1 राजाओं 19:4-8)।
    (4) गुफा में निराश बैठे एलिय्याह ने अंततः परमेश्वर की आवाज़ सुनी, जिसने उसकी व्याकुल प्रार्थना का उत्तर दिया (1 राजा 19:9-18)।
  - एक उत्तर तुरंत और चमत्कारिक था। दूसरा, सात बार की प्रार्थना के बाद, माँगी गई वर्षा के रूप में मिला। और अंत में, 40 दिनों के बाद, वाणी के द्वारा एक प्रोत्साहन देने वाला उत्तर मिला। परमेश्वर जानता है कि हमारी हर परिस्थिति में कैसे और कब उत्तर देना है।
- **हन्ना: एक ऐसा उत्तर जो कभी नहीं आता**
  - हन्ना की संतान के लिए प्रार्थना हमें एक ऐसी प्रार्थना प्रतीत होती है जिसका उत्तर परमेश्वर ने जल्दी दे दिया (बेशक, नौ महीने की आनंदपूर्ण प्रतीक्षा के बाद) (1 शमूएल 1:9-20)।
  - हालाँकि, जब हम पहले के पद्यों को पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि इस उत्तर के आने में बहुत लंबा समय लगा (1 शमूएल 1:1-8)।
  - एल्काना की दूसरी पत्नी पनिन्ना के "बच्चे" थे–अर्थात एक से अधिक पुत्र–और "वर्ष प्रति वर्ष" वह हन्ना को इस कारण चिढ़ाती थी कि परमेश्वर ने उसे संतान नहीं दी थी।
  - इस दृष्टिकोण से देखें तो, हन्ना ने बिना उत्तर पाए कितने वर्षों तक संतान के लिए प्रार्थना की होगी?
  - कभी-कभी, परमेश्वर का मौन हमारे स्वार्थ (याकूब 4:3), किसी प्रिय पाप (भजन संहिता 66:18), विश्वास की कमी (याकूब 1:6), या केवल इसलिए हो सकता है कि अभी सही समय नहीं आया है।
  - हर स्थिति में, परमेश्वर पूरी तस्वीर को देखता है और जानता है कि हमारे लिए क्या सबसे अच्छा है (यिर्मयाह 29:11)। वह हमेशा विश्वास से की गई प्रार्थना का उत्तर अपने समय और अपने तरीके से देता है (1 यूहन्ना 5:14-15)।

ख. आदर्श प्रार्थनाएँ:

- **यीशु: प्रार्थना की विषय-वस्तु**
  - लंबी और दिखावटी प्रार्थनाएँ करना, ताकि लोग प्रभावित हों और हमारी प्रशंसा करें, वह प्रार्थना की शैली नहीं है जो यीशु ने हमें सिखाई (मत्ती 6:5-8)।
  - हमारी प्रार्थनाएँ सच्ची और सरल होनी चाहिए, और आम बोलचाल की भाषा में होनी चाहिए। प्रार्थना हमारे जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है।
- **दानिय्येल: प्रार्थना की संरचना**
  - दानिय्येल 9:4-19 में दर्ज प्रार्थना हमें प्रार्थना के चार मूलभूत भागों को प्रस्तुत करती है:
    (1) स्तुति (दानिय्येल 9:4)
    (2) स्वीकारोक्ति और क्षमा (दानिय्येल 9:5-15)
    (3) निवेदन (याचना) (दानिय्येल 9:16-19)
    (4) धन्यवाद (फिलिप्पियों 4:6)
  - दानिय्येल इससे पहले अपनी प्रार्थना (धन्यवाद के भाग) को पूरा कर पाता, उससे पहले ही जिब्राएल ने उसे बीच में ही रोक दिया।
  - यह ढाँचा हमारी व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनों प्रकार की प्रार्थनाओं पर लागू होता है। स्पष्ट रूप से, "स्वीकारोक्ति और क्षमा" वाला भाग प्रार्थना के संदर्भ के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए।
  - यह संरचना हमें प्रार्थना को परमेश्वर पर केंद्रित रखने में सहायता करती है, ताकि वह दिव्य भंडार से "खरीदारी की सूची" जैसी न बन जाए।

ग. प्रार्थना के बारे में चार प्रश्न

- **हमें प्रार्थना क्यों करनी चाहिए, यदि परमेश्वर सब कुछ पहले से जानता है?**
  - प्रार्थना हमें परमेश्वर के सिंहासन तक उठाती है और हमें अपने आप की जाँच करने तथा प्रतिदिन उसके साथ अपने संबंध पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। यदि हमें यह पता न भी हो कि क्या कहना है, तो पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:26)।
- **जब सब कुछ ठीक चल रहा हो, तब प्रार्थना क्यों करें?**
  - जो स्वर्गदूत पाप में नहीं गिरे, वे भी निरंतर परमेश्वर की आराधना करते हैं। तो फिर हमें कितनी अधिक करनी चाहिए! यह सोचना कि हमें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सब कुछ अच्छा चल रहा है, अहंकार है।
- **हमें किसके साथ प्रार्थना करनी चाहिए?**
  - समय और परिस्थिति के अनुसार: अकेले में — यही वह समय है जब हमारी प्रार्थना सबसे अधिक व्यक्तिगत और गहरी होती है; परिवार के साथ या छोटे समूहों में; कलीसिया में।
- **मुझे कैसे सुनना चाहिए?**
  - सबसे स्पष्ट और सुरक्षित तरीका यह है कि हम प्रार्थना को बाइबल अध्ययन के साथ जोड़ें, इसे अपनी व्यक्तिगत आराधना का हिस्सा बनाएं, और केवल अपने मन को खाली करने या अपने ही विचारों को सुनने से बचें।